Sahitya Manthan
A Peer-Reviewed, Open Access e-journal
ISSN: 2582 6867, Website: http://www.sahityamanthan.in
Year-2, Issue-4, Continuous Issue-10, November - December 2021

'नाच्यौ बहुत गोपाल' उपन्यास और धर्म

धर्म परिवर्तन को लेकर आज-कल भारत के कई राज्यों के अंतर्गत नये – नये नियम घड़े जा रहें है काफी कुछ बदलाव भी आ रहा है। वैसे ये नये नियमों के बारे मुझे सही जानकारी नहीं है इसलिए उनके बारे में लिखना कि क्या सहीं है और क्या गलत है, वह कठिन कार्य है इसलिए मैं उस पर अपनी बात नहीं रखुगा लेकिन में जब यह उपन्यास पढ़ रहा था तो कई ऐसी बाते मेरे ध्यान में आई जिसमें एक बात मुझे धर्म परिवर्तन की भी देखने को मिली, जिसमें दलित समाज ने और ब्रह्मण समाज की कई महिलाओं ने क्रमसः ईसाई और मुस्लमान धर्म अंगीकार करनें की बात आयी और धर्मांतर्ण की बात आयी और साथ ही लव जैहाद की बातें आज कल समाज बहुत जोरो से चल रही है, इसलिए भी इस विषय ने अधिक आकर्षित किया और इसके बारें में लिख रहा हूँ।

इस उपन्यास में अधिक्तर जिन लोगों ने धर्म को परिवर्तन किया है वह मेहतर जाति या दलित समाज की बात है जिन्हों ने ईशाई धर्म अपनाया। उसके साथ दो –एक ऐसी ब्रह्मण जाति की बेबस स्त्रियों की बात है जिन्हों ने मुस्लीम धर्म को अंगीकार किया। ये स्त्रियाँ ऐसी है जो समाज के द्वारा छली गई, शोषित की गई है और उनका धर्म परिवर्तन करके भी शोषण ही हुआ है, उनकों दुख ही मिला है। वैसे निम्न जातियों के अंतर्गत धर्म जैसी बातों का विशेष महत्व नहीं होता क्योंकि जहां दो वक्त की रोटी के लिए लाले पड़ रहें हो वहां पर कौन धरम- इमान के बारे में सोचेगा, जहां अपनी प्राथमिक आवश्यकताएँ नहीं उपल्बध हो वहाँ कौन धरम की बात करें। जो कोई भी दो वक्त की रोटी मुहिया करवायें वह उसका भगवान। उसका ही उल्लेख लेखक ने किया है वे लिखते है -"एक बार जो मेरे अनुभव में और आ रही है, इन हरिजनों का संघर्ष केवल इस देश के हिंदुओं से ही नहीं बल्कि मुसलमानों और ईसाइयों से भी है। हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई, ऐसी कौन-सी भारतीय जाति है जो अपने आपको मेहतरों से ऊंचा नहीं समझती और जो उन्हें छूने से घिनाता नहीं है।"[1] यह हमारे समाज की एक तरह की सच्चाई भी है कि मुस्लमान हो या ईसाई इन धर्मों को अपना ने से जात – पात नहीं मिटती दलित कितना ही क्यों न उच्च संस्कार ग्रहण करले लेकिन रहता तो वह दलित ही है। उसका भी उजागर इस उपन्यास के अंतर्गत लेखक ने किया है। उपन्यास के मुख्य पात्र मोहन के मामू अपने किसी मित्र उल्लेख इस तरह करते हैं जैसे- "उनका एक बचपन का जानी-जिगरी साथी रहा, कल्लू। बताते रहें कि एक बार साला गली में किसी ऊँच जात वाले को छू गया सो ऐसा मारा गया...ऐसा मारा गया कि पन्द्रह दिनों तक खटिया से लगा रहा। उन दिनों काले पादरी हमाये लोगों में बहुत घूमते थे। एक ने उसे फुसला लिया तो क्रिस्चेन बन गया। मामू बताते थे कि क्रिस्चेन बन करके भी रहा ससरा भंगी का भंगी ही।"[2] उपर्युक्त हम देख सकते है कि ईसाई धर्म के अंतर्गत सामिल हो जाने के बावजूद भंगी तो भंगी रहता। क्रिस्चेन बनने के बाद व्यक्ति को चर्च वगेरे में जाने का प्रभू को भजने का अवसर अवश्य मिलता है लेकिन समाज में वह जिस जगह खडा है वहां से वह उपर नहीं उठ सकता हो सकता है उसे आर्थिक रूप से उसके जीवन में बदलाव आये लेकिन समाज में वह वही स्थान पाता है जो पहले पाता था, इसलिए उसकी सामाजिक स्थिति में कोई विशेष बदलाव नहीं देखने को मिलता, उस संबंध में भी लेखक ने इस उपन्यास के अंतर्गत लिखा है। जैसे -बरसों पहले एक पढ़े-लिखे ईसाई ने मुझे बतलाया था कि जो कुलीन हिन्दू अथवा कुलीन मुसलमान ईसाई बनते हैं वे अकुलीन ईसाइयों से शादी-ब्याह नहीं करते। मुसलमान ईसाई मुख्यतः मुसलमान ईसाइयों से ही शादी- ब्याह करते हैं।"[3]

यह उपन्यास में जिस समय का उल्लेख किया गया वह भारत की आजादी दौर का यानी की 1920 के बाद की बात इस उपन्यास में चित्रित है और उस समय ब्रिटिशों का भारत पर शासन था और वे किस तरीके से भारत के लोगों में अपने धर्म का प्रचार-प्रसार करने में लगे रहते थे उसका चित्रण इस उपन्यास में देख सकते है, खास करके इस उपन्यास में दो पात्र जैक्सन मास्टर और डॉ. एडरशन लोगों को लालच देकर क्रिस्चन धर्म में जुड़ने का आग्रह करते हुए नज़र आते हैं। जैसे- जैक्शन मोहन की पत्नी निर्गुनिया को कहता है -"टुम टो अच्चा-अच्चा समझडार औरट हाय। अपना ईस बुड्डू हास्बेन्ड को समझाओ। टुम डोनो क्रिस्चेन हो जाओ। हाम टुमको इस यंग क्रिस्चेन लीग का मैनेजर बना के अब होम जाना मांगटा।"[4] हम देख सकते हैं कि जैक्शन मास्टर के बार-बार कहने पर भी मोहन ईसाई धर्म नहीं अपनाता है तो वह उनकी पत्नी को बहलाने फूसलाने की बात करता है। उसके साथ ही तरह- तरह की लोभ-लालच से उसने कई लोगों को ईसाई बनाया भी उसके भी उदाहरण इस उपन्यास के अंतर्गत देखने को मिलता है। जैसे- मोहन के दोस्त सिकंदर की ही बात देख सकते हैं। जैक्शन के अपने ही शब्दो में- "टुम लोग जल्डी से बैप्टिस्म ले लो। क्रिस्चेन ब्रडर हुड में आ जोओं। नाइन्टीन ट्वनेटी सिक्स का इयर खटम होने से पैले टुम लार्ड जीजस का गिरोह में आ जाओ। यू सी मैडम मोहन, शिकान्डर मेसी हमारे साठ काम करता। आमारा चोकरा। क्रिस्चेन गरीब आडमी। हाम मरियम से उसका शाडी बनाया। रेस्ट्रा खोलने का फिफ्टी रूपीज डिया हम। आब देखो, दे आर आर्निंग टू हन्ड्रेड रूपीज पर मंथ, मैडम।"[5] जैक्सन मोहन के परिवार को ईसाई बनाने के लिए इतना जल्दी में है कि उन्हों ने उनका नाम भी सोच लिया है वह कहता है- "मोहना, हम टुमारा वाइफ का और टुमारा भी नाम शोच लिया हाय। ये जूलियाना, टुम जैक्सन मोहन।"[6]

इस तरह का दूसरा किस्सा भी देखने को मिलता है जिसमें जैक्शन संरक्षण देने के बहाने माशुक को ईसाई बनाता है। जैसे- "उसमें तुर्त-फुर्त बप्तिस्मा दिलवाकर माशूक को ईसाई भी बनवा लिया। माशूक से कहता है कि जब-तक उसके मां-बाप के यहां उसकी खबर पहुंचाई जाती है और नवाब साहब उसे लेने के लिए यहां आते हैं तब तक सुरक्षा के लिए उसका ईसाई हो जाना ही अच्छा रहेगा। माशूक का ईसाई नाम डेविड रखा गया। जैंक्सन ने उसे यह भी लालच दिया था कि वह उसे लेकर इंग्लैंड चला जाएगा। वह उसे खूब पढ़ाएगा। उसे हाई क्लास नौकरी दिलवा देगा।"[7] इस तरह जैक्सन कई तरह के लालच देकर अपने धर्म को बढ़ावा दे रहा था। उसके बारें में लिखा है कि -"जैंक्सन नौकरी छूटने के बाद भी छावनी के इलाके में ही रहा, पैतीस रुपये महीने पर एक बंगला किराये पर ले लिया और छावनी के घसकटों, बावर्चियों, नाई, धोबी, मेहतर, चमारों के समाज में ईसाई धर्म का जोशीला प्रचारक बन गया।"[8]

जैक्सन की तरह ही एडरसन डॉक्टर भी उनसे मिलनेवाले लोगों को ईसाई बनाने के प्रयासरत दिखाई देता है उसका उल्लेख भी यहां देखने को मिलता है। जैसे - "वे मानुष नहीं फरिश्ते थे बाबूजी मुझसे कहते थे मैडम निर्गुनिया, क्रिस्चेन बन जाओ। मैं तुम्हारी बच्ची को विलायत भेजकर इसकी तकदीर बदल दूंगा।"[9] वैसे वह निर्गून को तो ईसाई बनाने में कामयाब नहीं हो पाता लेकिन वह इतना अवश्य करता है कि निर्गूनिया की बेटी को क्रिस्चन बनाकर उन्हें उसका नामकरण भी करता है। जैसे- "उन्हों ने ही उसे क्रिस्चेन बनाके मेरी नाम दिया।"[10]

इस उपन्यास के अंतर्गत मुस्लिम धर्म अपना ने की भी बाद हमें देखने को मिलती है और उसमें आयें दोनों ही किस्से आजकल काफी चर्चित विवादित विचार लव-जिहाद से भी जूड़े हुए नज़र आते हैं। क्योंकि लव–जिहाद के अंतर्गत भी किसी गैर मुस्लिम स्त्री के साथ मुसलमान पुरूष प्रेम करने के बाद उसे मुसलमान बनाता है और उसकी समाज में वाह-वाही होती है उसीका चित्रण इस उपन्यास में भी देखनो को मिलता है। यहां पर एक यूसुफबेग नामक पात्र का उल्लेख हुआ है वह पात्र भी प्रेम से ज्यादा मुसलमान

बनाने में ज्यादा उतावला नज़र आता है। उसका भी उल्लेख लेखक ने किया है। जैसे- "रिशीदेवी ने यूसुफबेग से बातें की। यूसुफ़ भी अकेला था और फिर उसे मुसलमान बनाने से मौलवियों और तबलिग वालों में उसकी इज़्ज़त बढ़ती, इसलिए वो बड़ी ख़ुशी से राजी हो गया। रिशीदेवी मौका देखती रहीं। एक दिन जब उनका ससुर जब रात में छेड़छाड़ करने लगे तो खूब जोर-जोर से चिल्लाने लगीं। घर-घर में किस्से फैले, हंसी हुई। और फिर रिशीदेवी अपनी जातवाली औरतों की तरह ही सवेरे खुलआम अपने सुसुर को गालियां देती हुई युसुफ के घर जाके बैठ गई। मुसलमान हो गई। इसमें भी यूसुफबेग की एक चाल रही। रिशिदेवी को मुसलमान बनाया पर उनसे निकाह नहीं किया। अपनी रखेल ही बना कर रखा। ऐसा लगता है, यूसुफबेग का दिल रिशीदेवी में उतना नहीं था जितना कि उन्हें मुसलमान बनाने में था। इसलिए बाद में उसने उन्हें बहुत दुःख दिया। आप तो ज्यादा कमा नहीं पाता था, इसलिए उसने रिशीदेवी के जिसम का सौदा करनेवाले ग्राहक लाने शुरू किए।"[11] यूसूफबेग उससे निकाह भी नहीं करता है, रखेल भी बनाता और जब उसकों पैसे की जरूरत होती है तो उसको धंधा करने के लिए मजबूर कर देता है। रिशिदेवी प्रेम के लिए अपना धर्म बदलती है लेकिन अंत में उसकों कुछ हासिल नहीं होता वह वैश्या बनकर रह जाती है हर तरह से शोषित ही होती है। उपन्यास के अंतर्गत एक दूसरा किस्सा भी उसी तरह का देखने को मिलता जिसमें ब्रह्मण स्त्री वेदवती की बात वह भी पहले अपने किसी यार से ठगी जाती है बाद में मुसलमान धर्म अपनाने के बाद भी ठगी ही जाती है। जैसे - "एक धनी रिश्तेदार से उन्हें गरभ रहा। उसे कोशिश करके निकाला ना जा सका तो वेदवती से कहा कि मेरे कारखाने के जुलाहे छुट्टे मियां का नाम ले दो, बाकी मैं सब ठीक कर लूंगा। आर्यसमाजी शुद्धी का जमाना है। उस साले को किसी जुरूम में कोतवाली में बंद करा दूंगा और तुम्हारा फिर से पराश्चित कराके बस्ती से ठाठ से रखूंगा। भोली वेदवती उसकी बातों में आ गई। छुट्टे मियां मेरे यार के कहने से मान गए और मुझे अपने घर ले गए। वेदवती जी किस तरह छली गई। बाद में न छुट्टे मियां ने उन्हें अपने यहां रखा न उस धोखेबाज चेहरे बिरादरी वाले ने ही। हां छुट्टे मियां ने चलते जमाने का जस लूटने के लिए वेदवती जी को मुसलमान जरूर बनवा दिया और बाद में एक रंडी नायिका के हाथ बेंच दिया।"[12] इसमें भी मुसलमान होने के बाद वेदवती को वैश्या बनने पर मजबूर किया जाता है। उस तरह से धर्म परिवर्तन करके शोषण और धोखा देने की बात भी इस उपन्यास के अंतर्गत हमें देखने को मिलती है।

वैसे संवैधानिक नियमानुसार भारत किसी भी नागरीक को अपना धर्म चुनने का अधिकार है वह स्वतंत्र है पर इस उपन्यास के अंतर्गत हमें देखने को मिलता है कि धर्म को लेकर कई बातों जो उल्लेख हुआ वह जिसमें लगता है कि कई लोगों ने उपनी इच्छा से धर्म परिवर्तन किया है। गौर से सारी बातों की ध्यान दें तो एक धर्म से दूसरे धर्म अपना ने के लिए मजबूर किया गया है, ललचाया गया है। वैसे उपन्यास के अंतर्गत जबरदस्ती किसीको धर्म परिवर्तन करने के लिए फरमान नहीं किया गया है लेकिन धर्म परिवर्तन के नाम पर धोखा देने की बात अवश्य है और यह भी कहा जा सकता है किसी को मजबूरी वश धर्मांतरण करना या धर्म परिवर्तन करवाने के बाद उसकों धोखा देना भी गलत है। उसके विश्वास को चोट पहूँचाना भी गलत है।

संदर्भ ग्रंथ -

1. अमृतलाल नागर, नाच्यौ बहुत गोपाल, राजपाल एण्ड सन्ज, कश्मीरी गेट दिल्ली, 1991, पृष्ठ संख्या– 35
2. वही, पृष्ठ संख्या– 75
3. वही, पृष्ठ संख्या– 35
4. वही, पृष्ठ संख्या– 118

5. वही, पृष्ठ संख्या– 118
6. वही, पृष्ठ संख्या– 126
7. वही, पृष्ठ संख्या– 100
8. वही, पृष्ठ संख्या–127
9. वही, पृष्ठ संख्या– 184
10. वही, पृष्ठ संख्या– 184
11. वही, पृष्ठ संख्या– 208
12. वही, पृष्ठ संख्या– 209

डॉ. चौधरी राजेन्द्र कुमार एस.
सहायक अध्यापक **(** अस्थायी**),**
तुलनात्मक साहित्य एवं हिन्दी केन्द्र
वीर नर्मद दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय, सुरत
Email – rchaudhiry@gmail.com
फोन नं**. 9825482920**